निबन्ध (ESSAY)

DTVF/17–ESY-E4

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Mukesh kumar Lunayat

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04 10-08-2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	5	9	0	5

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): Hindi

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Mukesh

103

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू०सी०ए०) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहियें।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा गया कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड A और B में प्रत्येक से एक-एक चुनकर, दो निबंध लिखिये जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों में हो: 125×2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Sections A and B, in about 1000–1200 words each: 125×2 = 250

खण्ड–A / SECTION –A

1. यदि धन दूसरों की भलाई के लिये प्रयुक्त होता है तो इसका कोई मूल्य है, अगर नहीं, तो यह केवल बुराइयों का ढेर है तथा इससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाए उतना बेहतर है।
   If money help a man to do good to others, it is of some value; but if not, it is simply a mass of evil, and the sooner it is got rid of, the better.
2. दोहरा तुलन पत्र संलक्षण।
   Twin Balance Sheet Syndrome.
3. जलवायु परिवर्तन: प्रत्येक कदम आगे की ओर नहीं है।
   Climate Change: Every step is not a forward step.
4. प्रतीक्षा न करें, समुचित समय कभी नहीं आएगा।
   Do not wait, the time will never be just right.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - A

4. प्रतीक्षा न करें, समुचित समय कभी नहीं आएगा।

उत्तर :

अब पछताये क्या होय, जब चिड़िया चुग गई खेत।

प्राचीन काल से ही यह कहावत प्रचलित रही है। समय के बीत जाने के बाद पछतावे से कोई लाभ नहीं मिलता है। इस संसार में केवल एक ही चीज ऐसी है, जो किसी का भी इंतजार नहीं करती, वह है, समय। जो व्यक्ति समय का सम्मान नहीं करते हैं, समय उनका सम्मान नहीं करता है।

सामान्य मनुष्य स्वभाव से भाग्यवादी रहा है, वह अपनी असफलता के लिए समय को कोसता है। कई बार वह इसी भाव के साथ निष्क्रिय रहता है कि अभी उसका समय सही नहीं चल रहा है, सही समय के आने पर ही वह सफल हो पाएगा। वस्तुतः ऐसा कुछ भी सत्य नहीं है। समय अपने आप में अमूर्त अवधारणा है, उसके सही या गलत होने का गुण नहीं पाया जाता है। मनुष्य विवेकशील प्राणी होने के नाते उसमें सही या गलत होने का निर्धारण है। मनुष्य उसमें अर्थ भरता है, मूर्तता लाता है। अतः मनुष्य के कर्म

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सही या गलत समय निर्धारित करते हैं।

समय की सबसे रोचक महिमा है, कि यह किसी का इंतजार नहीं करता है। इसे टाला नहीं जा सकता है। अतः जो मनुष्य निष्क्रिय होकर केवल अच्छा समय आने का इंतजार करते रहे हैं, वास्तव में वैसा समय कभी आता ही नहीं है क्योंकि समय हमेशा एक जैसा रहता है - नित्य, शाश्वत, अमूर्त।

यदि कोई व्यक्ति केवल भाग्य पर निर्भर न होकर अथाह प्रयास एवं कठिन मेहनत करता है तो वह समय को भी अपनी ओर मोड़ सकता है। आशय है कि समय अपने आप में सही या गलत न होकर उसके उचित या अनुचित होने का निर्णय मनुष्य विशेष की अभिवृत्ति, चरित्र एवं व्यक्तित्व द्वारा तय होता है। जो मनुष्य समय की महत्व समझते हैं एवं सम्मान करते हैं, समय को उनका सम्मान करना पड़ता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान के इस प्रतिस्पर्धी युग में समय की इसी महानता का समझना बहुत आवश्यक है। जो व्यक्ति, समाज, समुदाय या राष्ट्र केवल अच्छे समय का इंतजार करते हैं, उनके लिए वैसा समय कभी भी नहीं आता है फलतः ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को, समुदाय सामुदायिक लक्ष्यों को एवं राष्ट्र राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी सम्पूर्ण मानवता का इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि इतिहास में केवल उसी को स्मृतिपटल पर रखा जाता है जिसने समय की प्रतीक्षा न करते हुए, अपनी शक्ति के आधार पर नियति को बदला। इतिहास में जितने भी महान शासक हुए हैं, उन सब में यह बात सर्वसाधारण है कि उन्हें स्वयं की क्षमताओं पर पूर्ण विश्वास था। भाग्य पर भरोसा किए बिना वे स्वयं अपनी दिशा निर्धारित करते थे।

उदाहरण अवश्य शामिल करें।

दार्शनिक दृष्टिकोण से भी माना जाता है कि "मनुष्य अपना भाग्य स्वयं निर्धारित करता है"। कर्मनियम का सिद्धांत इसी आधारभूत मान्यता पर टिका है कि मनुष्य का वर्तमान जीवन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके पूर्व जीवन के कर्मों का फल है एवं उसका भविष्य जीवन वर्तमान के कर्मों का फल होगा। अर्थात् मनुष्य का वर्तमान ही उसके भविष्य का निर्धारण करता है, न कि आने वाला समय। समय का एकमात्र पहलू यह है कि इसे टाला नहीं जा सकता, समय नित्य व शाश्वत है, यह हमेशा से था, वर्तमान में है, भविष्य में हमेशा रहेगा। परन्तु यह समय अपने आप में सही या गलत नहीं होगा बल्कि उसकी इस प्रामाणिकता का निर्धारण मनुष्य विशेष हेतु, मनुष्य विशेष के वर्तमान के कर्म निर्धारित करेंगे।

इसका आशय यह भी है कि यदि कोई व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र अच्छा भविष्य चाहता है तो उसे वर्तमान पर सर्वाधिक ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा।

आर्थिक क्षेत्र में नियोजन प्रणाली के साथ भी ऐसा है। आंध्र में विकास प्रक्रिया में माना गया की यदि विकास प्रक्रिया में हम पंचवर्षीय योजनाओं (भारतीय संदर्भ) के माध्यम से कुछ क्षेत्रों पर सर्वाधिक ध्यान केन्द्रित करें तो समय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के साथ उसका लाभ अन्य सभी क्षेत्रों में विसरित हो जाएगा। इसे ही सरल भाषा में 'अधोमुखी रिसाव' (Downward filteration) कहा गया। परन्तु वास्तव में ऐसा कभी हुआ नहीं। प्रत्येक पंचवर्षीय योजनाओं, अन्य योजनाओं या वर्तमान में चल रही योजनाओं में लक्ष्य निर्धारित किए गये, परन्तु शायद ही कोई योजना के लक्ष्य को समय पर या समय से पूर्व पाया गया हो। यह दर्शाता है कि समय की प्रतीक्षा करने के बजाय योजना की सफलता हेतु वास्तव में जमीनी स्तर पर उसके संबंध में विशिष्ट प्रयासों की आवश्यकता होती है।

समय पर योजनाओं के लक्ष्यों को प्राप्त न कर पाना यह मानवीय एवं संस्थागत प्रयासों की असफलता व निष्क्रियता को दर्शाता है। इसरी ओर जिन-जिन योजनाओं में समयबद्ध क्रियान्वयन हेतु प्रयास किए गए, उनके हमेशा सकारात्मक परिणाम सामने आए। आशय है कि समय अपने आप में समुचित नहीं होता, उसे केवल और केवल सामूहिक, संस्थानिक व एकजुट प्रयासों से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समुचित बनाना पड़ता है। परन्तु यदि समय की अवहेलना की गई तो उसके विपरीत परिणाम भी हो सकते हैं, ऐसा ही कुछ पर्यावरण के मामले में सम्पूर्ण विश्व समुदाय को सामना करना पड़ रहा है।

वर्तमान में वैश्विक चुनौतियां यथा ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र जल स्तर में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसमीय घटनाओं की आवृत्ति व स्थानिकता में परिवर्तन, ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन एवं सभी प्रकार के प्रदूषण के वृद्धि तथा इन सब के कारण हो रही जैव विविधता को हानि कहीं न कहीं मनुष्य द्वारा समय के महत्व की अवहेलना व स्वार्थ का परिणाम है। राष्ट्र-राष्ट्रों ने बिना आगामी पीढ़ियों की परवाह किये, अतिशय औद्योगीकरण के कारण इन समस्याओं को जन्म दिया है। समय के प्रति दूरदर्शिता के अभाव ने ऐसी समस्याओं को पैदा किया है। IPCC व अन्य कई पर्यावरण व परिस्थितिकी से संबंधित संस्थाओं का अनुमान है कि 21वीं सदी के अंत तक वैश्विक तापमान में 2-4°C की वृद्धि हो सकती है।

यहाँ समय की औचित्यता यही है कि आज से करीब 83 वर्ष बाद इस सदी को समाप्त होना है, इसे टाला नहीं जा सकता है, परन्तु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यदि उचित समय के आने की प्रतीक्षा करने के बजाय सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय द्वारा एकजुट होकर इस दिशा में प्रयत्न किये जाएं तो पर्यावरण संबंधी इन अनुमानित परिणामों को अवश्य बदला जा सकता है। अर्थात् उचित, संगठित एवं अथाह प्रयासों के माध्यम से 21वीं सदी के अंत तक होने वाले इस संभावित परिवर्तनों को रोका जा सकता है या उनकी तीव्रता कम की जा सकती है। स्पष्टतः ऐसा होना या न होना केवल और केवल मानवीय प्रयासों पर निर्भर करता है, समुचित समय के आने पर नहीं। ऐसा ही एक सतत विकास लक्ष्यों (SDG's) के साथ है।

सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (MDG's) को तय अंतिम वर्ष (2015) के पश्चात् नई रणनीति के रूप में अपनाये गये 17 सतत विकास लक्ष्यों में वर्तमान विश्व-समुदाय द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों चाहें वह करीब 85 मिलियन लोगों के गरीबी में जीवन यापन की हो, भूखमरी, अच्छा स्वास्थ्य एवं देखभाल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक-असमानता को कम करना, स्वच्छ जल व स्वच्छता, वहनीय व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वच्छ ऊर्जा, उचित कार्य एवं आर्थिक विकास, उद्योग, नवाचार व आधारिक संरचना की उपलब्धि। अन्तःदेशीय व अन्तर्देशीय असमानताओं को कम करना, सतत शहर व समुदायों का निर्माण, जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु कार्ययोजना, जल के नीचे जीवन, भूमि पर जीवन, शांति, न्याय व निष्पक्ष संस्थाओं की स्थापना तथा उपबन्धन प्राप्ति हेतु वैश्विक भागीदारी है। इन सभी चुनौतियों से निपटने हेतु तथा इस दिशा में निर्धारित समावेशक व निषेधात्मक लक्ष्यों की 2030 तक प्राप्ति केवल और केवल संगठित, सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो सकती है, न कि 2030 के आने के इंतजार के साथ।

समय के हाथ में कोई जादुई छड़ी नहीं है कि उसकी सहायता से अभीष्ट समय आ जाए। न ही समय के पहिये या काल-चक्र की अच्छी-बुरी समयावधियों में ऐसा कोई विभाजन, कि बुरे की समाप्ति के बाद अच्छा समय आएगा। वस्तुतः ऐसा कुछ भी नहीं है। इस संदर्भ में जो एकमात्र सत् है वह यह कि समय नित्य है, शाश्वत है, इसे नियत समय पर आने से कोई नहीं रोक सकता, हाँ समय के साथ आने वाले परिणामों को अवश्य रोका जा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जा सकता है, नापा जा सकता है, आगे बढ़ाया जा सकता है। क्योंकि ये परिणाम हम पर, हमारे कार्यों की दिशा व प्रकृति पर निर्भर करते हैं। हालांकि साथ ही साथ यह भी समान रूप से सत्य है कि कर्म के बदले प्राप्त होने वाले परिणाम को बदला नहीं जा सकता है जब तक की कर्म में बदलाव न लाया जाए। इसी संदर्भ में भागवद गीता में 'निष्काम कर्म' के बारे में कहा गया है –

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

आशय है कि कर्म करना ही हमारा ध्येय है, परिणाम हमारे वश में नहीं है। कर्मों के अनुरूप परिणाम या फल मिलना निश्चित है।

इसी में यह भी निहित है कि शुभ कर्मों का फल शुभ, अशुभ कर्मों (उदा. आतिशय औद्योगीकरण) का फल अशुभ (पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग) मिलना निश्चित है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि समय अपने आप में समुचित या अनुचित नहीं होता है। व्यक्ति, समुदाय, राष्ट्र या सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय की गतिविधियों व उनके परिणाम उसमें सही या गलत होने का भाव उत्पन्न

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करते हैं। इसी में यह भी निहित है कि भाग्यवादी होने में कोई औचित्य नहीं है। पुनः कर्म या प्रयासों की प्रकृति, तीव्रता व दिशा को परिवर्तित कर समय में अनुकूल अर्थ यह सही या गलत का भाव उत्पन्न करना मनुष्य के अपने वश में है। अतः आवश्यकता है कि स्वार्थ से परार्थ, लघुता से प्रभुता तथा स्वयं के उत्थान से सर्वोदय होते हुए अंत्योदय की ओर बढ़ने की।

स्मरण रहे कि यह पृथ्वी हमने अपने पूर्वजों से विरासत में ग्रहण नहीं की है अपितु इसे हमने अपनी भावी पीढ़ियों से ऋण स्वरूप ग्रहण करना है। हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें उजड़ी धरती, जहरीली नदियाँ या प्रदूषित हवा न देकर एक सतत, धारणीय, विविधतापूर्ण एवं स्वच्छ पृथ्वी प्रदान करें ताकि मनुष्य व अन्य जीव-जगत के विकास की यह प्रक्रिया निरन्तर जारी रह सके। समय की सबसे बड़ी सीख भी यही होगी कि हम इतिहास से सीख लेते हुए भविष्य की दशा व दिशा निर्धारित करें।

अच्छा प्रयास है।

कुछ अन्य आयाम जैसे → अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा आतंकवाद, PSLS → आन्तरिक सुरक्षा

5

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड–B / SECTION –B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. सार्वलौकिक आधार आय की परिकल्पना, गांधी जी के बिना कार्य के धन अर्जन के विचार का विरोधाभास है।

   The concept of Universal Basic Income (UBI), contradicts the views of Gandhi ji about wealth without work.

2. युद्ध से बचने के लिये क्या बेहतर है: आक्रामकता या शांति?

   What is better to avoid war: Aggressiveness or peace?

3. ऊर्जा सुरक्षा के लिये भारत को संसाधनों के साथ-साथ स्रोतों में भी विविधता लाने की आवश्यकता है।

   For Energy Security India needs to diversify resources as well as sources.

4. बुजुर्गों का हाथ थामना: अभी या कभी नहीं।

   Hand holding the elderly: Now or Never.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3] ऊर्जा सुरक्षा के लिये भारत को संसाधनों के साथ-साथ स्रोतों में भी विविधता लाने की आवश्यकता है।

उत्तर:-

सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (MDG's) के बाद की अवधि हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2015-2030 की अवधि के लिए घोषित सतत विकास लक्ष्यों (SDG's) में सातवां लक्ष्य "वहनीय एवं स्वच्छ ऊर्जा" की उपलब्धि सुनिश्चित करना है। वर्तमान दौर में वैश्विकृत से वैश्वीकृत एवं प्रतिस्पर्धी संसार में किसी भी देश के समावेशी, सतत, धारणीय एवं तीव्र विकास को सुनिश्चित करने में ऊर्जा-सुरक्षा एक निर्धारक कारक की भूमिका में है। तीव्र शहरीकृत एवं औद्योगिकीकृत संसार में ऊर्जा क्षेत्र ने न केवल व्यापार व व्यवसाय के क्षेत्र में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में भी ऊर्जा-कूटनीति के नये दौर का सूत्रपात किया है। इन परिस्थितियों में सबसे अधिक निश्चिन्त केवल वही राष्ट्र हो सकता है जिसके पास पर्याप्त ऊर्जा सुरक्षा हो। इस हेतु न केवल संसाधनों की बहुलता आवश्यक है अपितु ऊर्जा के संभावित स्रोतों की विविधता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है ताकि किसी भी विपरीत परिस्थिति से बचा जा सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय संदर्भ में ऊर्जा-सुरक्षा के दो पहलू अत्यंत महत्वपूर्ण है (क) ऊर्जा संसाधनों की विविधता ख) ऊर्जा स्रोतों की विविधता। इन दोनों में प्रत्येक में अन्तः देशीय, अन्तःराज्यीय, अन्तर्क्षेत्रीय एवं अन्तः अन्तर्देशीय (परस्पर देशों में) संसाधनों व स्रोतों पर पहुंच महत्वपूर्ण है।

जहाँ तक संसाधनों का मसला है इस संदर्भ में इन्हें 2 मुख्य भागों में बांटा जा सकता है- परंपरागत ऊर्जा स्रोत एवं गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत। भारत में परंपरागत ऊर्जा संसाधनों में जीवाश्म आधारित ऊर्जा संसाधन (कोयला, गैस, पेट्रोलियम), परमाणु ऊर्जा, जलविद्युत ऊर्जा आदि प्रमुख है। वहीं गैर परंपरागत साधनों में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा आदि प्रमुख है। इन क्षेत्रों के अलावा हाल ही के दिनों में शेल गैस, गैस हाइड्रेट्स, टाइट गैस आदि नये स्रोतों के रूप में उभरे हैं।

दिसम्बर 2015 में सम्पन्न पेरिस जलवायु समझौते से पूर्व ही भारत ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयन्ती पर इस संदर्भ में अपने लक्ष्य निर्धारित किये जिसके तहत भारत 2030 तक अपनी उत्सर्जन गहनता को 2005 के स्तर से 33-35 % तक कम करेगा (INDC)। इसी के साथ भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कम से कम 40% गैर जीवाश्मीय स्रोतों से प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

ध्यातव्य है कि इसी दिशा में भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा मिशन के तहत 2022 तक 175 GW स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों से उत्पादित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें से 100 GW सौर ऊर्जा, 60 GW पवन ऊर्जा से, 10 GW जलविद्युत ऊर्जा से तथा बाकी 5 GW अन्य ऊर्जा स्रोतों से उत्पादित करने का लक्ष्य रखा है।

संसाधनों में विविधता फैलाने के क्रम में हमें परंपरागत ऊर्जा संसाधनों तथा जीवाश्म आधारित ऊर्जा संसाधनों के स्रोतों व नये क्षेत्रों की खोज को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में गोदावरी कृष्णा बेसिन (KG बेसिन), पूर्वोत्तर भारत के जीवाश्म ऊर्जा संसाधनों की क्षमताओं का अभी दोहन नहीं हो सका है। इसी के साथ-साथ बोम्बे हाई के अलावा पश्चिमी तट पर, पश्चिमी राजस्थान व गुजरात के क्षेत्रों - विशेषतः बाड़मेर, बीकानेर में भी व्यापक संभावनाएँ हैं, जिनके दोहन की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परमाणु ऊर्जा के संदर्भ में हमें छोटे परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को तीव्र करना पड़ेगा ताकि उपलब्ध संसाधनों विशेषत: केरल की मोनोजाइट बालू से प्राप्त थोरियम व पूर्वोत्तर राज्यों से यूरेनियम का निष्कर्षण योग्य तकनीक विकसित की जा सके।

नवी. स्वच्छ ऊर्जा का क्षेत्र भारत में असीम संभावनाएं है। भौगोलिक स्थिति के दृष्टिकोण से भारत उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है जहां साल में करीब 300 दिन अच्छी धूप प्राप्त होती है। अत: सौर ऊर्जा भारत हेतु एक असीम ऊर्जा संसाधन उपलब्ध करा सकती है। हमें सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान व नवाचार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि लागत प्रभावी तकनीकों का विकास किया जा सके। इस संदर्भ में बड़े सौर-ऊर्जा पार्कों के साथ-साथ लघु सौर ग्रिड, फोटोवोल्टिक सौर ऊर्जा, सौलर फोटोवोल्टिक तकनीक, सोलर सेल, सौर ऊर्जा पंप एवं अन्य सभी उपलब्ध विकल्पों के बराबर दोहन की आवश्यकता है।

भारत की वृहत तटीय सीमा विशेषत: तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश के तटीय क्षेत्र,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेगिस्तान का थार मरुस्थल, तटीय क्षेत्र एवं गुजरात का कच्छ क्षेत्र पवन ऊर्जा हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं, इसकी क्षमता के अनुरूप दोहन की आवश्यकता है।

जल विद्युत के क्षेत्र में हिमालयी राज्य, एवं विशेषतः पूर्वोत्तर भारत अतीव संभावनाओं वाला क्षेत्र है, पूर्वोत्तर भारत में जल विद्युत में निवेश न केवल ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि करेगा अपितु उग्रवाद व समावेशी विकास को भी बढ़ावा देगा। जल विद्युत के संदर्भ में विभिन्न बांध परियोजनाओं - यथा चम्बल, भाँखड़ा नांगल, दामोदर नदी घाटी परियोजनाओं इसी के साथ असंख्य छोटी-छोटी परियोजनाओं को भी सभी राज्यों में बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में जलविद्युत ऊर्जा के स्थानीय स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ऊर्जा के नये उभरते स्रोत जिनमें शेल गैस व गैस हाइड्रेट्स मुख्य हैं। भारत में इनकी खोज को बढ़ावा दिये जाने की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हाल ही में भारत सरकार द्वारा अपनी गयी HELP पॉलिसी इस दिशा में प्रशंसनीय कदम है क्यों एक लाइसेंस के माध्यम से ही सभी प्रकार के ऊर्जा स्रोतों की खोज को बढ़ावा देती है।

शेल गैस के संदर्भ में कृष्णा-गोदावरी बेसिन व खंभात खाड़ी क्षेत्र संभावित स्रोत माने जा रहे हैं। अतः इस संदर्भ में और अधिक खोज व अनुसंधान हेतु निधि आवंटित करने की आवश्यकता है।

ऊर्जा संसाधनों की विविधता के साथ-साथ इसकी प्राप्ति के स्रोतों में विविधता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। भारत सकल स्तर पर एक ऊर्जा-घाटा (energy-deficient) वाला देश है अर्थात, इसे अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं हेतु आयात पर भी निर्भर रहना पड़ता है। ऊर्जा के स्रोतों में विविधता में भी आंतरिक व बाह्य स्रोतों, दोनों में विविधता समान रूप से महत्वपूर्ण है। बाह्य ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण में भारत ने जलविद्युत के क्षेत्र में भूटान व नेपाल में व्याप्त असीम संभावनाओं के लाभ प्राप्ति हेतु इन दोनों देशों से आदान प्रदान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपलब्ध कराकर वहां जलविद्युत संयंत्रों के विकास में मदद करने की रणनीति अपनायी है। भारत इन दोनों ही देशों से जलविद्युत खरीदता है। 2008 के एक समझौते के अनुसार भारत ने भूटान में 2020 तक 10,000 मेगावाट जलविद्युत क्षमता को विकसित करने का लक्ष्य किया है।

ऊर्जा के बाह्य स्रोतों में विशेषतः तेल व पेट्रोलियम पर भारत परंपरागत रूप से मध्य-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों पर निर्भर रहा है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का काफी बड़ा हिस्सा लगभग 3/4 हिस्सा इन्हीं राष्ट्रों से प्राप्त करता है (विशेषकर कच्चा तेल)। ऐसी स्थिति में इन राष्ट्रों में ऊर्जा या तेल, कच्चे तेल के कीमतों का प्रभाव भारत को प्रभावित करता है। अतः इसके प्रभाव को न्यूनतम करने हेतु विविधीकरण आवश्यक है। शताब्दी के वर्षों में अमेरिका व ऐसे देशों में शेल-गैस से आयी क्रांति ने भारत की मध्य-पूर्व पर निर्भरता कम की है। भारत अब अमेरिका से काफी बड़ी मात्रा में शेल-गैस खरीदता है। शेल-गैस के उपादक उपकरणों के साथ ऊर्जा संकटों को भंग करने की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

असैन्य परमाणु ऊर्जा सहयोग एक ही एक क्षेत्र है। भारत की एक जिम्मेदार परमाणु ऊर्जा प्रणाली के रूप में छवि रही है। हाल ही में इस दिशा में कूटनीतिक स्तर पर प्रगति हुई है, भारत ने आस्ट्रेलिया, कनाडा, जापान आदि राष्ट्रों के साथ असैन्य परमाणु ऊर्जा समझौते किए हैं। परन्तु धरातलीय स्तर पर ऊर्जा सच्चे अर्थ में बड़े स्तर पर आदान-प्रदान आरंभ नहीं हुआ है, इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। साथ ही अन्य राष्ट्रों के साथ भी परमाणु ऊर्जा सहयोग को बढ़ावा देना जरूरी है। भारत को NSG में शामिल होने के अपने प्रयासों में निरंतर जारी रखने की आवश्यकता है।

स्वच्छ ऊर्जा के संदर्भ में दिसम्बर 2015 में पेरिस सम्मेलन के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय सौर एलायंस (ISA) जिसके करीब 120 के आस-पास सदस्य-राष्ट्र हो गये हैं, व्यापक सहयोग वित्तीय एवं तकनीकी मुद्दों पर प्रगति अपेक्षित है।

ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति के बाह्य स्रोतों में द. पूर्वी एशिया भारतीय संदर्भ में अद्भुत सा है। भारत म्यांमार, कंबोडिया, वियतनाम, कोरिया एवं अन्य आसियान राष्ट्रों के साथ अलग-अलग एवं ब्लॉक के प्लेटफार्म पर अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं हेतु वैकल्पिक स्रोतों के तलाशने की योजना कर सकता है। हालांकि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हाल ही में वियतनाम व म्यांमार के संदर्भ में कुछ प्रगति हुई है परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। इस संदर्भ में एक्ट ईस्ट नीति की भावना के अनुरूप तथा पूर्वोत्तर भारत की ऊर्जा व विकास आवश्यकताओं में म्यांमार के साथ ऊर्जा संबंधों का पूर्ण क्षमता में दोहन अत्यंत आवश्यकता है।

इन वैश्विक प्रयासों के साथ-साथ भारत को अपने अंदर की कुछ राज्यों में उनकी भौगोलिक व भौतिक विशेषताओं के अनुरूप विविध ऊर्जा स्रोतों की खोज, विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ: जीवाश्म ऊर्जा के संदर्भ में विशेषतः गैस व तेल के क्षेत्र में पश्चिमी राजस्थान - बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर का क्षेत्र अभी तक अछूता सा है। केयर्न एनर्जी कंपनी ने यहाँ असीम मात्रा में स्रोतों की पुष्टि की है। पुनः गुजरात का कच्छ क्षेत्र (तेल, गैस), पूर्वोत्तर भारत में जलविद्युत, हिमालयी राज्यों में जल विद्युत, तटीय प्रदेशों में विशेषतः खंभात की खाड़ी में ज्वारीय ऊर्जा, हिमाचल प्रदेश में भूतापीय ऊर्जा, मध्य-पूर्वी राज्यों में कोयला आधारित ऊर्जा संयंत्रों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

??

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा प्राप्त विद्युत के वितरण, पारेषण में भी सुधार अपेक्षित है। इस संदर्भ में ऑपन एक्सेस, नेट मीटरिंग जैसे बिन्दुओं के पूर्ण दोहन की आवश्यकता है। Discoms की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने हेतु उनकी योजना को और सुदृढ़ बनाना है। खाना पकाने की गैस तक गरीब वर्गों की पहुंच सुलभ कराने हेतु प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना को और विस्तारित करना है। भारत में अब भी गरीब एवं निर्धन परिवारों की विद्युत कनेक्शन तक पहुंच नहीं है। इस संदर्भ में दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण ज्योति योजना को तीव्र करने की आवश्यकता है।

53

निष्कर्षतः 21वीं सदी में केवल वही राष्ट्र इस विश्व का नेतृत्व कर सकेगा जिसने पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त कर ली है। भारत में सम्पूर्ण विश्व को नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता है, ऊर्जा ही विकास की इस रेल का इंजन है अतः ऊर्जा संसाधनों व स्रोतों को विविध करते हुए एवं ऊर्जा रणनीति के माध्यम से ऊर्जा सुरक्षा सुरक्षित की जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation